भारत में महिला सशक्तिकरण–एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

मो0 इमरान आलम

प्राचीन समय से ही महिलाओं को द्वितीयक श्रेणी का माना जाता रहा। महिलाओं को नगरवधू प्रणाली, पर्दा–प्रथा, दहेज–प्रथा, बाल–विवाह, सती–प्रथा, तलाक, एवं कन्याभ्रूण हत्या जैसे घृणित प्रथाओं का दंश झेलना पड़ा है। लेकिन इसी बीच अनेकों सम्राटों एवं महान् हस्तियों ने इन्हें उच्च दर्जा प्रदान करने हेतु प्रयत्नशील रहे। राजा राममोहन राय ने सति–प्रथा उन्मूलन हेतु ब्रिटिश साम्राज्य से संघर्ष किया। समाज सुधारक ईश्वर चंद्र विद्यासागर, आचार्य विनोबा भावे, स्वामी विवेकानंद ने महिलाओं को हक देने की बात समाज के समक्ष रखी और लोगों ने उनके बातों को आत्मसात भी किया। सशक्तिकरण की प्रथम प्रक्रिया में विश्व समाज में व्याप्त पारंपरिक पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण में परिवर्त्तन लाना होगा। इसी दृष्टिकोण ने महिलाओं को कमतर आँकते हुए अपेक्षा का शिकार बनाया है। वैश्विक स्तर पर नारी वादी आंदोलन एवं स्वयं सेवी संगठनों ने महिलाओं को समाज, न्याय एवं राजनीतिक तथा आर्थिक क्षेत्र में सुदृढ़ बनाने में अहम भागीदारी अपनाई हैं।